Shodhaamrit, Vol.-3; Issue-3 (July-September) 2026 : Page No.-195-201

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-5.375
Vol.-3; issue-3 (July-Sept.) 2026
Page No- 195-201
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

1. राजीव कुमार
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा.

2. प्रो. (डॉ) देव नारायण साह
शोध–निर्देशक, सेवानिवृत पूर्व विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, मधेपुरा.

Corresponding Author :

राजीव कुमार
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा.

लिली रे क रचनामे नारी चेतनाक स्वर : अस्मिता, आत्मनिर्भरता आ उत्थानक प्रयास

सारांश : आधुनिक मैथिली साहित्यमे नारी-चेतनाक स्वर क्रमशः बेसी मुखर, बहुआयामी आ संघर्षशील रुपमे विकसित भेल अछि। ई चेतना मात्र स्त्रीक पीड़ा, विवशता आ शोषणक अभिव्यक्ति नहि, अपितु ओकर आत्मबोध, स्वाभिमान, आर्थिक आत्मनिर्भरता, वैचारिक स्वतंत्रता आ प्रतिरोधक आकांक्षासँ सेहो सम्बद्ध अछि। मैथिलीक प्रमुख कथाकार लिली रे अपन कथा-उपन्याससभमे नारी जीवनक एहन अनेक पक्षकेँ उद्घाटित कयने छथि, जाहिमे परम्परागत सामाजिक संरचनासँ पीड़ित स्त्रीक करुण दशाक संग-संग संघर्षशील, स्वनिर्णयी आ आत्मसम्मानसँ सम्पन्न स्त्रीक रुप सेहो उपस्थित अछि। प्रस्तुत आलेखमे उपलब्ध लिली रेक विभिन्न रचनामे चित्रित नारी-चेतनाक विश्लेषण कयल गेल अछि। 'रंगीन परदा'मे सामाजिक नैतिकताक आड़िमे संचालित यौन-विकृति आ नारी-शोषण, 'विधिक विधान'मे पानमतीक आर्थिक संघर्ष आ स्वाभिमान, 'मरीचिका'मे हीरा, रानी जी आ राजमाता आदिक माध्यमसँ स्त्री-अस्मिता आ अन्तर्निहित शक्तिक प्रश्न, 'जिद'मे देवकीक स्वनिर्मित जीवन, 'चक्र'मे आहत नारीक कर्मठता आ अन्य रचनामे स्त्रीक आत्म-निर्णय आ विद्रोहक स्वर विशेष रुपसँ उल्लेखनीय अछि। लिली रेक रचनामे नारीक प्रतिरोध पुरुष-विरोधक रुपमे नहि, अपितु अन्याय, उपेक्षा, असमानता आ रुढ़िक विरुद्ध मानवीय समानताक संघर्षक रुपमे प्रकट होइत अछि। एहि दृष्टिसँ हुनक रचनासभ मैथिली साहित्यमे नारी-जागरण आ नारी-उत्थानक महत्वपूर्ण दस्तावेज सिद्ध होइत अछि।

बीजशब्द : लिली रे, नारी-चेतना, स्त्री-अस्मिता, आत्मबोध, आर्थिक आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान, प्रतिरोध, नारी-उत्थान, मैथिली कथा-साहित्य।

प्रस्तावना : नर आ नारीक परस्पर सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व मानवीय समाजक आधारभूत आवश्यकता रहल अछि। सृष्टिक निर्माण आ सामाजिक जीवनक निरन्तरता दुनू एक-दोसरक पूरकतासँ सम्भव होइत अछि। भारतीय चिन्तन-परम्परामे सेहो नारीक महत्वक स्वीकृति प्राचीन कालसँ रहल अछि। वैदिक युगमे नारीक शिक्षा, ज्ञान आ सामाजिक सहभागिताक अनेक प्रमाणक चर्चा भेटैत अछि। मुदा कालान्तरमे

सामाजिक संरचना अधिक पुरुषप्रधान बनैत गेल आ स्त्रीक स्वतंत्र अस्तित्व पर अनेक प्रकारक बन्धन आरोपित होइत गेल।

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' अपन नवकवितामे कहने छलाह –
'रमा रहित रामक अयन नहि अशक्ति पुरुषत्व
लालदास रचि 'रामेश्वर–चरित' बुझाओल तत्व'[1]

आधुनिक युगमे नारीक स्थिति, अधिकार आ अस्मिताक प्रश्न सामाजिक विमर्शक महत्वपूर्ण विषय बनल। स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद भारतीय संविधान द्वारा समानताक अधिकारक स्वीकृति तथा विभिन्न वैधानिक प्रयासक माध्यमसँ महिलाक सामाजिक स्थिति सुधारबाक प्रयास भेल। भारतीय संविधानक अनुच्छेद (14–18) द्वारा प्रत्येक भारतीय नागरिककेँ स्वतंत्रताक अधिकार अछि। स्त्री सम्पतिक अधिकारक शुरूआत 1955 मे भेल जाहिक माध्यमसँ पारिवारिक सम्पितमे पुत्री, पत्नी आ माताक रूपमे आधिकार दैत अछि। 1970मे संशोधनक परिणामस्वरूप स्त्रीकेँ तलाकक सुविधा प्रदान कयल गेल।[2] एहन परिवर्तित परिवेशमे साहित्य सेहो नारीक जीवनक नव प्रश्नसभ दिस उन्मुख भेल। स्त्रीक असंतोष, कुण्था, विवशता, आक्रोश, स्वाभिमान आ अपन अधिकारक प्रति जागरूकता साहित्यक विषय बनल।

मैथिली साहित्य सेहो एहि व्यापक सामाजिक आ वैचारिक परिवर्तनसँ अप्रभावित नहि रहल। विभिन्न साहित्यकार लोकनि नारी जीवनक यथार्थक चित्रण कयलनि। हरिमोहन झा, यात्री, सुरेन्द्र झा 'सुमन', रमानन्द रेणु, प्रभास कुमार चौधरी, उषा किरण खाँ, लिली रे, कमला चौधरी, नीता झा आदि रचनाकार अपन-अपन ढंगसँ नारी जीवनक विभिन्न पक्षकेँ अभिव्यक्ति देलनि। यात्री जी अपन पोथी चित्राक विलाप शीर्षक कवितामे स्त्रीक एहि अवस्थाक लेल पुरुषकेँ जिम्मेदार बतबैत लिखैत छथि –

अगड़ाही लगौ बरु बज्र खसौ
एहेन जाति पर बरु धसना धसौ
भूकम्प हौक बरु फटौ धरती
माँ मिथिला रहिये क' की करती![3]

एहि परम्परामे लिली रेक स्थान विशेष महत्व रखैत अछि, कारण हुनक रचनामे नारी मात्र करुणा आ सहानुभूतिक पात्र नहि, अपितु आत्मबोधसँ सम्पन्न संघर्षशील व्यक्तित्वक रूपमे उपस्थित अछि।

लिली रेक रचनाक केन्द्रमे जीवनक यथार्थ अछि। हुनक स्त्री-पात्र पीड़ित छथि, मुदा मात्र पीड़ित नहि छथि; ओ संघर्ष करैत छथि। ओ उपेक्षित छथि, मुदा अपन उपेक्षाक विरुद्ध निर्णय सेहो लैत छथि। ओ प्रेम करैत छथि, सम्बन्ध निम्हाबैत छथि, परिवारक दायित्व वहन करैत छथि; मुदा जखन हुनक स्वाभिमान आ अस्तित्वपर चोट पड़ैत अछि, तखन ओ मौन समर्पणक स्थानपर प्रतिरोधक बाट सेहो चुनैत छथि। इएह हुनक रचनामे नारी-चेतनाक मूल स्वर थिक।

नारी-चेतनाक वैचारिक पृष्ठभूमि : नारी-चेतनाक सम्बन्ध मात्र स्त्रीक बाह्य स्वतंत्रतासँ नहि, अपितु अपन अस्तित्वक बोधसँ अछि। जखन नारी अपन जीवन, अपन अधिकार, अपन इच्छा आ अपन मानवीय गरिमाक प्रति सजग होइत छथि, तखन नारी-चेतनाक आरम्भ होइत अछि। ई चेतना सामाजिक रुढ़ि, अन्याय आ शोषणक विरुद्ध प्रश्न ठाढ़ करैत अछि।

यात्री जी चित्रामे नारीक सामाजिक पीड़ाक तीव्र स्वर एना अभिव्यक्त भेल अछि—

"धर्मसँ जीवन बिताबै चाहै छी
इज्जति आबरु बचाबै चाहै छी
तैओ करय चाहैत छथि हमरा नचार
केहेन केहन ठोप चानन कैनिहार"[4]

एहि प्रकारक अभिव्यक्ति स्त्रीक व्यक्तिगत दुःखकेँ सामाजिक पीड़ामे परिणत करैत अछि। विधवा-जीवन, सामाजिक बन्धन आ रुढ़िगत मान्यताक कारण नारीक मनमे जमा होइत आक्रोश अन्ततः विद्रोही स्वर ग्रहण करैत अछि। स्त्रीक सम्मान आ सामाजिक प्रतिष्ठाक रक्षा करबाक इच्छा आ समाजक दमनकारी व्यवहारक विरोधमे अभिव्यक्त होइत अछि। लिली रेक कथा 'विधिक विधान'मे एकटा निम्नवर्गीय स्त्रीक संघर्षक वर्णन अछि। ओकर पतिक छोड़िकेँ चलि गेलाक बादो घर नहि जयबाक कारण ओकर चरित्रपर लाक्षण लगबैत कहैत छल – 'केओ केकरो संग भागत तँ पुरान डीहपर थोड़े बसत ओ तँ तेहन ठाम जाएत, जतऽ ओकरा केउ नहि चीन्हई मुर्ख छै तों।[5]

मुदा पानमती सामाजिक आरोपसभक बीच अपन संघर्ष जारी रखैत छथि। आर्थिक स्थिति सुधारैत छथि आ अपन बेटी पूनमक संग गृहस्थी चलबैत छथि। पति घुरि अयलाक बादो ओ मात्र पारिवारिक परम्परा वा सामाजिक दबावक कारण ओकरा स्वीकार नहि करैत छथि।

एहि निर्णयमे स्त्रीक स्वाभिमान आ आत्मनिर्णयक शक्ति स्पष्ट अछि। पानमतीक चरित्र देखबैत अछि जे स्त्रीक मुक्ति मात्र वैवाहिक सम्बन्धक अन्तमे नहि, अपितु अपन निर्णय स्वयं लेबाक सामर्थ्यमे निहित अछि। एहि अर्थमे पानमती लिली रेक रचनामे आर्थिक आत्मनिर्भरता आ स्वाभिमानक संयुक्त प्रतीक छथि।

ई स्थिति स्पष्ट करैत अछि जे स्त्रीक नैतिकता आ मर्यादाक भार समाज ओकरहि कान्हपर राखैत अछि, मुदा ओकर मानवीय गरिमाक रक्षा करबाक प्रश्नमे समाजक व्यवहार अक्सर विरोधाभासी रहल अछि।

एहि व्यापक पृष्ठभूमिमे लिली रेक रचना नारीक अन्तर्जगत आ बाह्य संघर्ष दुनूकेँ स्वर दैत अछि। हुनक लेखनमे नारीक चेतना क्रमशः पीड़ासँ प्रश्न, प्रश्नसँ आत्मबोध आ आत्मबोधसँ प्रतिरोध दिस बढ़ैत देखाइत अछि।

'रंगीन परदा' : नारी-शोषणक यथार्थ आ सतर्क चेतना : लिली रे प्रथमतः अपन कथा 'रंगीन परदा'[6] क कारण चर्चित भेलीह। एहा कथाक अनुसार सासु आ जामयक अवैध सम्बन्धक वर्णन अछि। कथाक केन्द्रमे मात्र काम-भावनाक चित्रण नहि, अपितु बाल-विवाह आ अनमेल विवाहक दुष्परिणामक संकेत सेहो अछि। कथा सामाजिक नैतिकताक ओहि जटिल स्वरूपकेँ उद्घाटित करैत अछि, जाहिमे बाह्य मर्यादा आ आन्तरिक विकृतिक बीच गम्भीर अन्तर अछि।

कथामे पुरुषक छलपूर्ण आश्वासनक स्वर सेहो द्दष्टव्य अछि—

"अहाँ किछु चिन्ता नहि करू, प्रिये! संसारमे एहन किछु नहि छैक जे रूपैयासँ नहि वनि सकैत अछि आर से रुपैया हम पानि जका वहाऽ देब..."[7]

एहि कथनमे प्रेमक स्थान पर अधिकार, लालसा आ आर्थिक ताकति द्वारा सम्बन्धकेँ नियन्त्रित करबाक पुरुषवादी मानसिकता प्रकट होइत अछि। लिली रे एहन प्रसंगक माध्यमसँ स्त्रीकेँ सतर्क रहबाक अप्रत्यक्ष संदेश दैत छथि। नारीक भावनात्मक दुर्बलताक लाभ उठबैत समाजक भीतर सक्रिय एहन मानसिकताक उद्घाटन नारी-चेतनाक महत्वपूर्ण पक्ष अछि।

'रंगीन परदा'मे नारीक शोषणक प्रश्न मात्र व्यक्तिगत नैतिकताक प्रश्न नहि रहि जाइत अछि। ई स्त्रीक जीवनक असुरक्षा, सामाजिक संरचना आ पुरुषक यौन-लिप्सासँ उत्पन्न संकट दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि। एहि द्दष्टिसँ ई कथा नारीक सजगता आ आत्मरक्षाक चेतना जगबैत अछि।

आर्थिक आत्मनिर्भरता : नारी-उत्थानक आधार : लिली रेक रचनामे नारीक आर्थिक आत्मनिर्भरता विशेष महत्व रखैत अछि। आर्थिक निर्भरता स्त्रीक पराधीनताक प्रमुख कारणसभमे एक मानल गेल अछि। जखन स्त्री अपन जीविकाक साधन स्वयं अर्जित करैत छथि, तखन निर्णय लेबाक क्षमता आ आत्मविश्वास दुनूमे वृद्धि होइत अछि।

एहि सन्दर्भमे हिनक रचनामे स्त्रीक आर्थिक स्वतंत्रताकेँ स्वतंत्रताक मूल शर्तक रुपमे देखल गेल अछि। लिली रेक विभिन्न रचनाक अनेक स्त्री-पात्र श्रमशील छथि आ अपन जीवन-संघर्षमे आर्थिक रूपसँ सक्रिय छथि। पानमती, पुनम, मुलिया, रेवती, देवकी, सावित्री, माया, गीता, सुगन्धि, सुरभि, राणुदेवी, फूलकुमारी, अनबरा

बेगम, सिस्टर रानी सुब्बा, प्रेमलता, हरिमाया, करुणा, अरुणा, सुजाता, कमला, दुर्गा, सोभिया, हीरा, मीनाक्षी, डॉ. आनंदिनी, मनुदाई, अर्पणा आदि पात्रक उल्लेख एहि रूपमे भेल अछि।

नारीवादी पोथीक पहिल लेखिका सिमोन अपन पोथी 'विन्डीकेशन ऑफ दी राइटस'मे आर्थिक दृष्टिसँ स्त्रीक आत्मनिर्भरतापर लिखने छथि – 'नौकरी कोनो रामबाण नहि मुदा एकर अतिरिक्तहूँ स्वतंत्रताक बुनियादी शर्त अछि।'[8]

एहि पात्रसभक माध्यमसँ ई बोध होइत अछि जे नारीक आर्थिक श्रम मात्र परिवारक सहायक क्रिया नहि, अपितु ओकर स्वतंत्र अस्तित्वक आधार अछि। आर्थिक आत्मनिर्भरता नारीक भीतरक भयकेँ कम करैत अछि आ ओकर आत्मविश्वासकेँ दृढ़ करैत अछि।

'स्व'-बोध आ वैचारिक स्वतंत्रता : लिली रेक नारी-पात्रक चेतनाक दोसर महत्वपूर्ण आयाम 'स्व'-बोध अछि। नारी माता, पुत्री, पत्नी वा प्रेमिकाक रूपमे अपन सम्बन्धक दायित्व निभबैत छथि, मुदा हुनक व्यक्तित्व केवल एही सम्बन्धसभमे सीमित नहि अछि। हुनक अपन इच्छा, आत्मसम्मान आ जीवन-दृष्टि सेहो अछि।

'बड्डु पुरान गप्प'क गीता एहि दृष्टिसँ महत्वपूर्ण छथि। हुनक कथन—

"बिना मोनक मेल के स्वामी-स्त्री बनि जीवन वितायब निरर्थक थिक। एहेन जीवन अपनायब हमरा अपना प्रति अन्याय करब होयत।"[9]

ई कथन वैवाहिक सम्बन्धक प्रचलित अवधारणाक विरुद्ध स्त्रीक आत्मबोधक उद्घोष अछि। गीता सम्बन्धकेँ मात्र सामाजिक संस्था मानि स्वीकार करबाक लेल तैयार नहि छथि। हुनका लेल मानसिक सामंजस्य आ मानवीय गरिमा आवश्यक अछि। एहि तरहें स्त्री अपन जीवनक सम्बन्धसभक मूल्यांकन अपने करैत छथि।

इएह स्व-बोध नारीकेँ मौन पीड़िताक अवस्थासँ बाहर आनैत अछि। जखन स्त्री अपन दुःखक कारणकेँ बुझैत छथि आ ओकर विरुद्ध निर्णय लेबाक क्षमता प्राप्त करैत छथि, तखन चेतना वास्तविक सामाजिक ताकति बनैत अछि।

'मरीचिका'मे नारी-अस्मिता आ अन्तर्निहित शक्तिक बोध : लिली रेक दीर्घ उपन्यास 'मरीचिका' नारी-चेतनाक विश्लेषण लेल बेस महत्वपूर्ण कृति अछि। उपलब्ध सामग्री अनुसार एहि उपन्यासमे भारतीय समाजक दीर्घकालीन उत्थान-पतनक संग स्त्रीक शोषण, उपेक्षा, प्रेम, अस्मिता आ मानसिक संघर्षक अनेक रूप उपस्थित अछि।

रानी जी : चेतना अछि, मुदा प्रतिरोधक ताकति सीमित अछि : रानी जी जानैत छथि जे राजा साहेब शहजादी वा रसवाला दाईक संग सम्बन्ध रखैत छथि, तथापि ओ प्रत्यक्ष विरोध नहि कऽ पबैत छथि। हुनका पतिक उपेक्षाक पीड़ा अछि, मुदा सामाजिक संरचना हुनका एतेक ताकति नहि दैत अछि जे ओ खुलिकऽ प्रश्न ठाढ़ करथि।

रानी जीक चरित्र ओहि भारतीय स्त्रीक प्रतिनिधित्व करैत अछि, जे अपन पीड़ा बुझैत छथि, मुदा प्रतिरोधक सामाजिक आ मानसिक साहसक अभावमे सहनशीलताक बाट अपनबैत छथि। उपन्यासमे एहि तथ्य दिस संकेत कयल गेल अछि जे अन्यायक विरोध समय पर नहि होए तँ अन्ततः परिणाम बेसी कष्टदायी भऽ सकैत अछि।

एहि तरहें रानी जीक चरित्र नारी-चेतनाक अपूर्ण अवस्थाक प्रतिनिधित्व करैत अछि। ओकरा अपन पीड़ाक बोध अछि, मुदा अपन अधिकार लेल संघर्ष करबाक क्षमता पूर्ण रूपसँ विकसित नहि अछि।

हीरा : दर्प, जिजीविषा आ आत्म-संघर्षक प्रतिमूर्ति : 'मरीचिका'क हीरा अत्यन्त जटिल स्त्री-पात्र छथि। हुनक जीवन प्रेम, उपेक्षा, अहंबोध आ निरन्तर संघर्षसँ निर्मित अछि। हुनक भीतर हार मानबाक सहज प्रवृत्ति नहि अछि। परिस्थितिसँ आहत भेलाक बादो ओ जीवनक संघर्षमे आगू बढ़ैत छथि।

हीराक माध्यमसँ लिली रे स्त्रीक मानसिक संसारक जटिलताकेँ उद्घाटित करैत छथि। स्त्रीक चेतना मात्र सामाजिक प्रतिरोध नहि, अपितु अपन अन्तरक दुविधा, आकांक्षा आ आत्मसम्मानसँ सेहो निर्मित होइत अछि।

हीरा आ पाठक जीक संवाद विशेष उल्लेखनीय अछि—

'कोनो स्त्री के पुरुष बनबाक आवश्यता नहि छैक।'

जखन ई प्रश्न उठैत अछि जे स्त्री पुरुष जकाँ सबल बनि सकैत छथि, तखन उत्तर भेटैत अछि—

'स्त्री तँ शक्तिक भण्डार थिक।'

पाठक जी दुर्गाक उदाहरण दैत स्त्रीक अन्तर्निहित शक्तिक बोध करबैत छथि।[10] एहि संवादक माध्यमसँ लेखिका स्त्रीकेँ पुरुषक प्रतिरूप बनबाक आवश्यकता नहि बतबैत छथि, अपितु स्त्रीक भीतर निहित अपन ताकति चिन्हबाक प्रेरणा दैत छथि। ई नारी-चेतनाक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थापना अछि।

राजमाता : परम्परा आ संघर्षक समन्वय : 'मरीचिका'मे राजमाता साहेबक चरित्र नारी-चेतनाक एकटा भिन्न रूप प्रस्तुत करैत अछि। ओ परम्पराक सेविका छथि, मुदा संकीर्णताक बन्धनमे पूर्णतः जकरल नहि छथि। परिस्थितिक माँग होए पर ओ नियम-परिनियमसँ ऊपर उठि संघर्ष करैत छथि।

एहि चरित्रमे लिली रे परम्पराक पूर्ण निषेध नहि करैत छथि। हुनक नारी-चेतना परम्परा आ आधुनिकताक सरल द्वन्द्व नहि, अपितु विवेकपूर्ण चयनक चेतना अछि। जे परम्परा मनुष्यक गरिमा आ जीवनक विकासमे सहायक अछि, ओकर सम्मान; मुदा जे बन्धन मनुष्यक स्वतंत्रता आ अस्तित्वकेँ नष्ट करैत अछि, ओकर प्रतिरोध, इएह दृष्टि राजमाताक चरित्रमे देखाइत अछि।

रंगीन परदाक देवकी : स्वाभिमानक खातिर सम्बन्धसँ मुक्ति : 'जिद'क देवकी लिली रेक संघर्षशील स्त्री-पात्रसभमे विशेष स्थान रखैत छथि। पति देवव्रतक उपेक्षा आ प्रेमी मधुकरक छलक बादो देवकी टूटिकऽ जीवन त्याग नहि करैत छथि। ओ अपन संसार स्वयं गढ़बाक प्रयास करैत छथि।

देवकीक निर्णयक तीव्रता एहि कथनमे प्रकट अछि–

'जनै छी! बच्चा सभक विछोह हमर हृदयमें सहस्र विच्छू जकाँ डंक मारत। मुदा तैओ नर्कमें रहब मंजूर अहि मुदा देवव्रत घोषालक संग नहि रहब।'[11]

एहि निर्णयमे मातृत्वक पीड़ा अछि, मुदा स्वाभिमानक आग्रह सेहो अछि। देवकीक प्रतिरोध मात्र आवेगक परिणाम नहि, अपितु अपमानजनक सम्बन्धमे रहब अस्वीकार अछि। एहि प्रकारे देवकी लिली रेक नारी-चेतनामे स्वनिर्माणक प्रतीक बनैत छथि।

स्वाभिमान आ सम्बन्धक पुनर्मूल्यांकन : लिली रेक रचनामे सम्बन्धसभक महत्त्व स्वीकार कयल गेल अछि, मुदा सम्बन्धक नामपर अपमान, उपेक्षा आ आत्महीनता स्वीकार्य नहि अछि। 'अबुझ' कथाक दुर्गा द्वारा मंगलसँ अलग होयबाक निर्णय एहि दृष्टिसँ महत्वपूर्ण अछि।

कथाक अनुसार दुर्गा अपन स्वाभिमानपर आघात पाबि चुपचाप दूर चलि जाइत छथि। ई निर्णय कष्टहीन नहि अछि, मुदा अपमानपूर्ण सम्बन्धमे रहबाक अपेक्षा स्वाभिमानक संग अलग रहब हुनका लेल अधिक सार्थक अछि।

एहि तरहें लिली रेक स्त्री-पात्र सम्बन्धकेँ जीवनक सहयोगी मानैत छथि, बन्धन नहि। सम्बन्ध जँ मनुष्यक गरिमाकेँ सुरक्षित रखैत अछि तँ ओ जीवनक शक्ति बनैत अछि; जँ ओ आत्मसम्मानकेँ नष्ट करैत अछि तँ ओकर पुनर्मूल्यांकन आवश्यक भऽ जाइत अछि।

शिक्षा, सामाजिक रूढ़ि आ नारी-चेतना : लिली रे सामाजिक रूढ़िसभक आलोचना प्रत्यक्ष उपदेशक रूपमे नहि, पात्रसभक माध्यमसँ करैत छथि। उदाहरणार्थ, ई कथन – 'तोरा लोकनि कोनो धनाढ्य नहि छें? हमरा सँ अडरेजीमे गप्प कऽ वरपक्ष किछु नहि मांगत तैं नहि वीमेन्स कॉलेजमे पढ़ौ लें?'[12]

एहि कथनमे नारी-शिक्षाक प्रति संकीर्ण मानसिकता आ दहेज-प्रथाक सामाजिक दबावक अप्रत्यक्ष उद्घाटन अछि। बेटीकेँ शिक्षा मात्र योग्य जीवनक लेल नहि, अपितु विवाहक बजारमे स्वीकार्यता लेल देब, ई मानसिकता स्वयं समाजक विडम्बना अछि।

लिली रे एहन प्रसंगक माध्यमसँ देखबैत छथि जे नारीक वास्तविक विकास लेल शिक्षा आवश्यक अछि। शिक्षासँ स्त्रीक दृष्टि विस्तृत होइत अछि, ओकर आत्मविश्वास बढ़ैत अछि आ ओ अपन जीवनक निर्णयमे बेसी सक्षम होइत छथि।

लक्ष्यविन्दु'क नायिकाक कथन –

'से तँ जतय अन्याय उत्पीड़न छइक, ततय दंगा-फसाद हेबहि करत।[13]

ई कथन अन्यायक विरुद्ध स्वाभाविक प्रतिरोधक उद्घोष अछि। तहिना सुरभिक निर्भीक व्यक्तित्व नारीक सामाजिक-सक्रियता आ साहसक प्रतीक अछि।

लिली रे स्त्रीक विद्रोहकेँ विनाशकारी नहि, अपितु परिवर्तनकारी ताकति मानैत छथि। हुनक रचनामे नारीक उपेक्षाक चित्रण सतीत्वक निष्क्रिय आदर्शसँ आगाँ बढ़ि विद्रोहक स्वरकेँ पुष्ट करैत अछि। मुदा ई विद्रोह अन्ततः नर-नारी समानताक आदर्शकेँ बल प्रदान करैत अछि।

नारीक अन्तर्निहित शक्तिक आवाहन : लिली रेक रचनामे एकटा निरन्तर विचार उपस्थित अछि जे मनुष्यक वास्तविक ताकति ओकर बाहर नहि, अपितु भीतर विद्यमान होइत अछि। विशेषतः नारीकेँ अपन अन्तर्निहित शक्तिक पहिचान करबाक प्रेरणा देल गेल अछि।

गीता, देवकी, पानमती, दुर्गा, हीरा, सुरभि आ अन्य स्त्री-पात्र विभिन्न परिस्थितिमे ई सिद्ध करैत छथि जे संघर्षक शक्ति नारीक भीतर निहित अछि। आवश्यकता अछि ओकरा चिन्हबाक आ सक्रिय करबाक।

एहि चेतनाक आधारपर नारी-उत्थानक अर्थ मात्र बाह्य अधिकार प्राप्ति नहि रहि जाइत अछि। वास्तविक उत्थान ओहि समय होइत अछि जखन स्त्री— अपन अस्तित्वक बोध प्राप्त करैत छथि, आर्थिक रूपसँ सक्षम बनैत छथि, अन्यायक विरोध करबाक साहस जुटबैत छथि, आत्मसम्मानक रक्षा करैत छथि, सम्बन्धसभक मूल्यांकन स्वयं करैत छथि, आ अपन जीवनक दिशा चुनबाक अधिकारक प्रयोग करैत छथि। लिली रेक स्त्री-पात्र एहि व्यापक चेतनाक विभिन्न रूप छथि।

निष्कर्ष : लिली रेक रचनामे नारी-चेतनाक स्वर बेस व्यापक आ बहुआयामी अछि। हुनक नारी-पात्र परम्परागत साहित्यक मात्र त्यागमयी, सहनशील वा करुण नारी नहि छथि। ओ पीड़ा सहैत छथि, मुदा पीड़ाक कारण सेहो बुझैत छथि; ओ शोषित छथि, मुदा शोषणक विरुद्ध प्रश्न सेहो ठाढ़ करैत छथि; ओ सम्बन्ध निम्हाबैत छथि, मुदा सम्बन्धक नामपर आत्मसम्मानक बलिदान करबाक लेल सदैव तैयार नहि छथि।

हुनक रचनामे नारी-चेतनाक प्रमुख आधार आर्थिक आत्मनिर्भरता, 'स्व'-बोध, वैचारिक स्वतंत्रता, स्वाभिमान, आत्मनिर्णय, प्रतिरोध आ अन्तर्निहित शक्तिक पहचान अछि। 'रंगीन परदा'मे सामाजिक यौन-विकृतिक उद्घाटन, 'विधिक विधान'मे पानमतीक संघर्ष, 'मरीचिका'मे हीरा, रानी जी आ राजमाताक माध्यमसँ स्त्री-अस्मिताक विविध स्तर, 'जिद'मे देवकीक स्वाभिमानी निर्णय, 'चक्र'मे आत्मपुनर्निर्माण आ अन्य कथासभमे विद्रोही आ कर्मठ नारीक उपस्थिति एहि तथ्यकेँ प्रमाणित करैत अछि।

लिली रेक रचनाक नारी विद्रोह पुरुषक विरुद्ध नहि, अपितु पुरुषप्रधान मानसिकता, सामाजिक असमानता, अन्याय, शोषण आ मानवीय गरिमाक हननक विरुद्ध अछि। तेँ हुनक नारी-चेतना अन्ततः समानता आ सह-अस्तित्वक चेतना अछि।

एहि तरहेँ कहि सकैत छी जे लिली रे मैथिली कथा-साहित्यमे नारीकेँ मात्र दुःखक कथा नहि लिखैत छथि; ओ नारीक जागरणक कथा लिखैत छथि। हुनक रचनामे स्त्रीक आँखिक नोर मात्र करुणाक प्रतीक नहि, अपितु चेतनाक जल सेहो अछि; ओकर आक्रोश विद्रोह नहि, नव जीवनक खोज अछि; आ ओकर संघर्ष व्यक्तिगत मुक्ति नहि, नारी-उत्थानक सामाजिक आधार तैयार करबाक प्रयास अछि। यैह लिली रेक रचनामे नारी-चेतनाक विशिष्ट आ महत्वपूर्ण स्वर थिक।

संदर्भ सूची :

1. झा, आर्चाय सुरेन्द्र 'सुमन', कविनवतिका
2. श्रीवास्तव, सुधा रानी, भारत मे महिलाओं की वैधानिक स्थिति, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 2012, पृ0 सं0 – 05
3. यात्री, वैद्यनाथ मिश्र, यात्री समग्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, पृ0 सं0 – 36
4. ओतहि
5. झा, डॉ रामानन्द रमण (संपादक) लाली गुरांस, कथा संग्रह, लिली रे, साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसव पाही, मधुबनी, पृ0 सं0 – 126
6. झा, डॉ रामानन्द रमण (संपादक) रंगीन परदा, कथा संग्रह, लिली रे, साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसव पाही, मधुबनी
7. उपरोक्त, पृ0 सं0 – 26
8. खेतान, डॉ प्रभा, स्त्री के पास खोने के लिये कुछ नहीं है, पृ0 सं0 – 5
9. झा, डॉ रामानन्द रमण (संपादक) उपसंहार आ एकटा बड्डु पुरान गप्प, लिली रे, साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसव पाही, मधुबनी, 2015, पृ0 सं0 – 135
10. रे लिली, मरीचिका भाग – 1, मैथिली अकादमी, पटना, दोसर संस्करण – 2008, पृ0 सं0 – 56
11. झा, डॉ रामानन्द रमण (संपादक) रंगीन परदा, कथा संग्रह, लिली रे, साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसव पाही, मधुबनी, पृ0 सं0 – 122
12. झा, डॉ रामानन्द रमण (संपादक) लाली गुरांस, कथा संग्रह, लिली रे, साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसव पाही, मधुबनी, पृ0 सं0 – 145
13. झा, डॉ रामानन्द रमण (संपादक) रंगीन परदा, कथा संग्रह, लक्ष्य, लिली रे, साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसव पाही, मधुबनी, पृ0 सं0 – 196

•